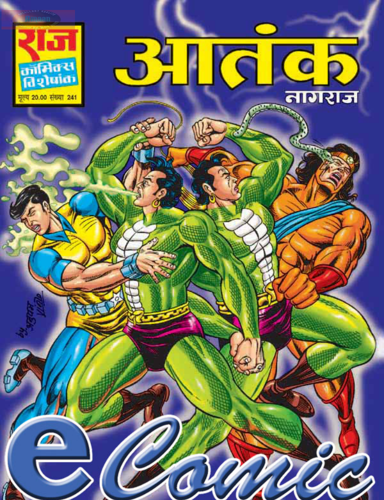
राज
कॉमिक्स विशेषांक
मूल्य 20.00 संख्या 241
आतंक
नागराज
eComic

जब नागराज से टकराए... खुद नागराज... तो चारों तरफ सिर्फ एक ही चीज फैल सकती है...

आतंक

संजय गुप्ता की पेशकश

कथा:	चित्र:	इंकिंग:	सुलेख एवं रंग संयोजन:	सम्पादक:
जॉली सिन्हा.	अनुपम सिन्हा.	विनोद कुमार.	सुनील पाण्डेय.	मनीष गुप्ता.

ये क्या हो रहा है? तुम सब चिल्ला क्यों रहे हो?
सॉरी दीदी!
लेकिन यह तो पढ़ाई का वक्त है! खेल क्यों हो रहा है?
उधर देखो न, भारती दीदी!
यहां पानी की प्रॉब्लम को सॉल्व करने के लिए राज भइया, बोरिंग करवा रहे हैं! और पथरीली जमीन में छेद करने के लिए जो ड्रिलिंग मशीन आई है, वह इतना शोर कर रही है कि हम पढ़ ही नहीं सकते!
घर्र
ओह!
लेकिन मुझे किसलिए बुलाया है, बच्चों? यहां पर किसको खतरा है?
नागराज!
हमने तो तुमको अपने साथ खेलने के लिए बुलाया है, नागराज!
खेलने के लिए? यह तो तुमने गलत काम किया, बच्चो!
यह सच है कि बच्चे मुझे बहुत प्यारे हैं! मैं बच्चों के साथ खेलना चाहता हूं, और उनको खुश देखना चाहता हूं!
लेकिन यह भी सच है कि मैं एक 'क्राइमफाइटर' हूं! अपराध का विनाश करके एक स्वच्छ समाज की स्थापना करना मेरा लक्ष्य है!
तुमने मुझे अपना समय बिताने के लिए बुलाया!
हो सकता था कि इस वक्त मैं किसी अपराधी से लड़ रहा होता...

या किसी इंसान को मौत के मुंह से बचा रहा होता! या फिर... कोई और जरूरी काम कर रहा होता!
हमसे गलती हो गई! हमको माफ कर दो, नागराज!
अब हम तुमको जरूरत पड़ने पर ही बुलाएंगे!
प्रॉमिस?
प्रॉमिस, नागराज!
तो फिर मुंह लटकाए क्यों खड़े हो? चलो खेलते हैं!
याSSSSS
पर हम खेलेंगे क्या? गेम्स रूम की चाबी तो राज भइया ले गए!
और फिर-
नागराज तो हम सबकी शॉट एकसाथ रोक ले रहा है!
कम से कम 'सर्प बॉल' को तो 'गोल' में जाने दो, नागराज!

Amaan

Uploaded by ANAMIKA GUPTA

नागराज!
ये... कौन सी दुनिया है?
नागराज! ये बोरिंग का पाइप फाड़ कर निकला है!
पानी के साथ-साथ एक अंडर-ग्राऊंड मुसीबत भी ऊपर आ गई है, बच्चो!
यहीं रहना! मैं अभी आया!
इसको छोड़ दो भई! दुनिया के दर्शन तुमको मैं कराता हूं!
तूने... तूने एक मामूली इंसान होकर 'हंकारा' पर वार करने की हिम्मत की?

इंकारा तुझे इसकी सजा देगा! ... जरूर देगा!
ओह! किरण वार कर रहा है! कर ले! ऐसे वार तो नागराज रोज ही झेलता है!
अरे! अरे! मेरा एक सर्प बगैर मेरे आदेश के मेरे शरीर से निकल कर यह वार झेल रहा है!
पर क्यों?
मेरे आदेश पर नागराज! और तुम्हारी 'क्यों' का जवाब तुम्हारे सामने है!
अभी ये हालत तुम्हारी होने वाली थी! यह जादुई वार था!
ओह! धन्यवाद सौडांगी!
अभी मैं अति आत्मविश्वास के चक्कर में मारा जाता!
मारा तो तू जाएगा ही नागराज! ... तू अपनी मौत को सिर्फ थोड़ी देर के लिए टाल सकता है! हमेशा के लिए नहीं!

मेरा जादुई वार तुझे विखंडित कर देगा! हवा में घुल जाएगा तू!
व्हीम् छीक छू! देखा? घुल गया न!
मर गया नीच मानव!
तुम्हारी जुबान बहुत गन्दी है, इसीलिए तुम्हारी भाषा भी खराब है! मैं अभी इसको बाहर खींचकर साफ कर देता हूं!
फुSSSS
तेरा वार लगाने से पहले मैं खुद ही कणों में बदल गया था, हंकारा!
टक
अब तू मंत्र बोल कर जादुई हमला नहीं कर सकता!
अरे! अरे! तू बच कैसे गया? वापस कैसे आ गया? यह तो असंभव है!
आSSSह!
मेरी जीभ! ईSSSS! मेरी जीभ खींच ली इसने! अब मैं जादुई वार करने के लिए मंत्र नहीं बोल सकता! लेकिन हंकारा सिर्फ जीभ का मोहताज नहीं है! मेरे पास और भी शक्तियां हैं! जादुई सींग है मेरे पास!
मैं तेरे मस्तिष्क में सूक्ष्म सर्प भेजकर यह जान लूंगा कि तू है कौन, और तेरा मकसद क्या है?

नागराज को सर्प छोड़ पाने का मौका ही नहीं मिला-
आऽऽऽह! ये... ये क्या? इसका सींग धंसते ही जमीन में एक अजीब सी ऊर्जा दौड़ रही है!
लेकिन ये ऊर्जा मुझे कोई नुकसान नहीं पहुंचा रही है!
तो फिर इस ऊर्जा का मतलब क्या है...?
आऽऽऽह!
धड़क
नागराज की नजरें उठीं-
और उसका दिल दहल गया-
आऽऽऽह! यह क्या? मैं देख रहा हूं, पर यकीन नहीं कर पा रहा हूं!
वेदाचार्य भविष्यधाम की इमारत जिन्दा हो उठी है! और मुझ पर हमला कर रही है!
यह तो जादू है!

राज कॉमिक्स
लेकिन तू सफल नहीं होगा, हंकारा! नागराज तेरे जादू को तोड़ देगा! तेरे जादू से बनी हर चीज को तोड़कर!
नहीं कर पाएगा, नागराज!
क्योंकि अब तो मेरी जीभ फिर से उग आई है!
तू तो 'भवनजीव' के वारों को अपने तक पहुंचने ही नहीं दे रहा है! एक बार 'भवन जीव' तुझको निगल जाए तो तू मेरा जादू तोड़कर कभी बाहर नहीं आ पाएगा...
... लेकिन 'भवनजीव' तुझे निगलेगा कैसे? हां, एक रास्ता है!
अरे! अरे! ये 'भवनजीव' मुझे छोड़कर बच्चों की तरफ लपक रहा है! उनको अपने अन्दर खींच रहा है!
वेदाचार्य
हां, नागराज! अब तू खुद जाएगा 'भवनजीव' के मुंह के अन्दर!
क्योंकि मैं देख चुका हूं कि बच्चों से तुझको कितना प्यार है!

जरूर जाऊंगा! ये तो सिर्फ भवन-जीव का मुंह है! मासूम बच्चों को बचाने के लिए तो मैं मौत के मुंह में भी कूद सकता हूं!
हा हा हा! घुस गया नीच मानव, भवनजीव के अन्दर! अब यह बाहर कभी नहीं निकल पाएगा!
अब मुझे यह यंत्र ले जाने से कोई नहीं रोक सकता! यह भूमिगत जल को निकाल देगा, और रक्ष शिरोमणि विभत्सु आजाद हो जाएंगे!
हा हा हा हा! भाग्य हमारे साथ है! मानवों के साथ नहीं!
चल मेरे साथ!
नागराज, भवनजीव के अन्दर मौत से जूझ रहा था-
नागराज!
घबराओ मत बच्चो! मैं आ रहा हूं... ओह! सर्प मुझे जकड़ रहे हैं!

मैं अभी इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करके आजाद हो जाता हूं!... अरे!
मेरे इच्छाधारी कण इस जादुई शिकंजे के पार नहीं जा पा रहे हैं! और तीन पलों के बाद...
... मुझे सामान्य रूप में आना ही पड़ेगा...
...आऽऽऽह!
ये टुकड़े तो मेरी हड्डियां तोड़ डालेंगे!
उधर बच्चों की कैद का दरवाजा भी बन्द हो रहा है!
शारीरिक शक्ति के प्रयोग के अलावा और कोई रास्ता नहीं है!
ये सरिये मुझसे लिपटे तो रह सकते हैं, लेकिन मैं इनको दीवारों से अलग कर दूंगा!
अब सबसे पहले बच्चों को इस कमरे से निकालना होगा!... आऽऽऽह!
इस दीवार पर तो मेरे वार का असर ही नहीं हो रहा है!
ध्वंसक सर्प भी बेअसर है!
अब क्या करूं?

नागराज! हमको बचाओ, क... कमरा छोटा होता जा रहा है! दीवारें हमको पीसने के लिए हमारे पास आती जा रही हैं!
यहां पर भी यही हो रहा है, बच्चों! पर घबराओ मत! मैं तुमको एक खरोंच तक भी नहीं लगने दूंगा!
धड़ाक
क्या करूं? ये दीवार तो हिल तक नहीं रही है! जादू की जादू ही काट सकता है!
इस जादुई दीवार को तोड़ेंगी, जादुई सलाखें!
नागराज!
घबराओ मत बच्चों! मैं आ गया हूं!
मैं अभी तुम लोगों को यहां से बाहर ले... आऽऽऽ ह!
जमीन हिल रही है, नागराज!
भवनजीव हिल रहा है! डरो मत, बच्चों!

मुझ पर कसे सरियों के शिकंजे खुल गए हैं! यानी... भवनजीव मुझे जहां पर लाना चाहता था, वहां पर ले आया है! पर कहां?
बिल्डिंग हिलती जा रही है! और अब पानी के टूटे पाईपों से पानी भी निकलकर यहां भर रहा है! ...
... शायद भवनजीव हमको डुबोकर मारना चाहता है!
लेकिन–
नागराज! मेरे बदन में जलन हो रही है!
मेरे भी!
समझा! हम भवनजीव के पेट में हैं! ये भोजन पचाने वाले रसायन हैं, पानी नहीं! और हमको हिलाया इसीलिए जा रहा है, ताकि हमको ये रसायन जल्दी घोल सकें! ओह! चाहे खुद मर जाऊं, लेकिन बच्चों को तो बचाना ही होगा! ... पर कैसे?

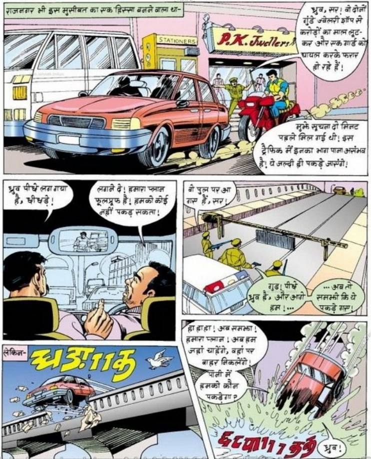

Uploaded by ANAMIKA GUPTA

Amaan

ध्रुव हमको कैसे पकड़ेगा? वह इतनी जल्दी मॉस्क और सिलेंडर ला ही नहीं सकता! और जब तक वह डुबकी मारने का सामान लाएगा...
ध्रुव पानी में सांस ले सकता है, घीघड़े!
क्या? तूने पहले क्यों नहीं बताया?
तूने पूछा ही नहीं?
लेकिन कैसे? कोई इंसान पानी में सांस कैसे ले सकता है? वह मछली है क्या?
मछली पकड़ने वाला है! सुना है कि किसी जादूगर ने उसके गले में कोई यंत्र फिट कर दिया है! और वह यंत्र पानी को भी ऑक्सीजन में बदल देता है!
सत्यानाश!
और गहरी डुबकी मारते हैं!
ध्रुव, लुटेरे के पीछे पड़ा था-
ये नदी काफी लंबी और गहरी है! कई जगहों पर तो हजारों मीटर की गहराई है! इतनी लंबी और गहरी नदी में उनको कहां ढूंढूं?
एक तरीका है! वे पानी में बगैर ऑक्सीजन सिलेंडर के नहीं रह सकते! और जहां ऑक्सीजन सिलेंडर होगा, वहां बुलबुले भी होंगे! जो सतह पर आएंगे!
सारी चिड़ियों को सतह पर के बुलबुले ढूंढने के काम में लगा देता हूं!
जल्दी ही-
आहा! ये रहे बुलबुले!
वे अपराधी ठीक इस जगह के नीचे हैं!

जल्दी ही-
छीछड़े! ये तो हमारे पीछे आ गया!
मर गए! किस बुरी घड़ी में मैंने लूट के माल का बैग तेरे पास छोड़ दिया था! खैर, अब जान तो बचाऊं!
ये तो अब अपने आप सतह पर जाकर ही रुकेगा, जहां पुलिस इसका इंतजार कर रही है!
लेकिन ये छीछड़े तो और गहराई में उतरता जा रहा है!
छीछड़े की जान बचाने के अलावा और कुछ नहीं सूझ रहा था-
य... यह क्या है? यहां का पानी कुछ अजीब सा लग रहा है!
पूरे शरीर में झटके से लग रहे हैं! नसें जैसे खिंचती जा रही हैं!
मैं बदल रहा हूं! शैतान बन रहा हूं, मैं! शैतान!
हा हा हा हा!
और मैं जानता हूं कि अब मुझे क्या करना है!

मुझे संसार में उत्पात मचाना है! आतंक फैलाना है दुनिया में!
आऽऽऽह! यह क्या हो गया? इसका रूप बदलकर इतना भयंकर कैसे हो गया? और... और ये आतंक फैलाना क्यों चाहता है?
कुछ भी हो! मुझे इसको पानी के अंदर ही रोकना होगा! मैं इसको राजनगर में तबाही फैलाने नहीं दूंगा!
लेकिन कैसे?
इतने शक्तिशाली प्राणी को मैं रोकूं तो कैसे? ये तो मुझे खींचता ले जा रहा है!

इसको रोकने के लिए कोई भारी चीज चाहिए! लंगर जैसी चीज! हां, मिल गई ऐसी चीज!
ये डूबी हुई कार!
छीछड़े का ऊपर बढ़ना एकाएक रुक गया-
आऽऽऽह! छीछड़े का दम घुट रहा है! हवा चाहिए! सांस चाहिए छीछड़े को!
इस बोझ को हटाना होगा!
हटाना होगा!
ये डोरी तो काफी मजबूत है! और लिपटी भी कसकर है!

Amaan

ओफ! ये तो आग छोड़ता है! अब इसको कैसे रोकूं?
ध्रुव सोचता ही रह गया-
और छीछड़ा सतह पर पहुंचकर अपने फेफड़े को हवा से भरने लगा-
ये... ये कौन है? खतरनाक लगता है!
शूट हिम!
हो हा हा हा! आग फेंकने वाले पर आग छोड़ रहे हो! मैं नहीं लेता!
तड़तड़ तड़ तड़तड़
वापस ले लो! ही हा हा हा!
छीछड़े पर आग असर नहीं करती! छीछड़ा ठंड से मर सकता है! कड़कती खून जमा देने वाली ठंड से! जो यहां पर है ही नहीं!

Uploaded by ANAMIKA GUPTA

Amaan

नागराज को भी कोई तरीका नहीं सूझ रहा था-
तुम लोग इस सर्प-खोल से बाहर मत निकलना बच्चों! ये सर्प-खोल खुद गलकर भी तुमको इन रसायनों से बचाएगा!
और इसके गलने पर मैं दूसरा खोल तैयार कर दूंगा!
बच्चों की तरफ से अब मैं कुछ देर के लिए निश्चिन्त हूं! अब इस भवन-जीव का कोई हल निकालना पड़ेगा! ये भवन-जीव इस वक्त जीवित प्राणी की तरह व्यवहार कर रहा है! और हर जीवित प्राणी को मेरा विष गला देता है!
देखूं कि मेरे 'सर्प विष' का इस 'जीवित इमारत' पर क्या असर होता है?
नालियों द्वारा नागराज का विष, पूरे भवन में फैला-
और पूरे भवन की दीवारें ऐसे कड़कड़ा उठीं-
मानो भवन-जीव चीखा हो-
क्ड्ड्ड्ड
ड्ड्ड
हां! मेरे विष का कुछ असर तो हुआ है! रसायनों की फुहार निकलनी बन्द हो गई है!...
...और दीवारें भी टूटने लगी हैं!
हम पर ईंटें गिर रही हैं! ओफ् ये क्या कर दिया मैंने? भवन-जीव का शरीर यानी यह इमारत भी गल रही है! अब इसी में हमारी कब्र बन जाएगी!
ओफ! अगर यह भवन जीवित न होता, तो शायद यूं गलता भी नहीं! अब क्या करूं?

Amaan

Uploaded by ANAMIKA GUPTA

Uploaded by ANAMIKA

Uploaded by ANAMIKA GUPTA

Uploaded by ANAMIKA GUPTA

Uploaded by ANAMIKA

Amaan

Uploaded by ANAMIKA GUPTA

Uploaded by ANAMIKA GUPTA

इसकी फुंकार रोकने का एकमात्र रास्ता मेरी फुंकार है! और उसका प्रयोग करने से मेरी अपनी जान जा सकती है! इसकी फुंकार को रोकना होगा! लेकिन इसको रोकूं तो कैसे?
एक रास्ता है...
नागराज की आंखें चमक उठीं-
सम्मोहन, हवा में तैरने लगा-
और फुंकार छोड़ने वाले दोनों सर्पों को एक-दूसरे की सूरत में नागराज नजर आने लगा-
दोनों एक-दूसरे पर ही फुंकार उगलने लगे-
और उसी पल, उसमें नागराज की फुंकार भी शामिल हो गई-
दोनों सर्पों को अपनी फुंकार से अलग होने का मौका ही नहीं मिला-
और उस धमाके ने उनके चिथड़े उड़ा दिए-

आश्चर्य की बात है! मेरी या मेरे सर्पों की फुंकार में तो कोई विस्फोटक क्षमता नहीं है! फिर इनकी फुंकार विस्फोटक क्यों थी? शायद ये जादू का असर था!
नहीं, नागराज! वे उस वक्त मेरे शरीर का अंग थे! और मैं 'ध्वंसक सर्प' का जादुई रूप हूं!...
... इसीलिए उनकी फुंकार में भी मेरे गुण समा गए थे! तू उनसे बच गया, लेकिन मुझसे नहीं बच सकता!
ओफ्! ये मुझको उलझाए हुए है, और हंकारा भूमिगतजल को निकालता जा रहा है!
न जाने कौन सी मुसीबत आने वाली है!
उधर ध्रुव का शरीर भंवर के अन्दर खिंचता ही जा रहा था-
ओह! ये भंवर तो पानी के अन्दर ही काफी दूर तक बनी हुई है!
पानी खारा हो गया है! और शॉर्क जैसी मछलियां भी नजर आ रही हैं! मतलब साफ है! भंवर मुझे खींचती हुई समुद्र तक ले आई है!
ओह! ये इलाका तो मेरा देखा हुआ है! मैं समझ गया कि ये भंवर किसने बनाई है!

यह स्वर्ण नगरी वासियों का काम है! उन्होंने ही इस भंवर के द्वारा धीखड़े को खींचा है, और मुझे भी बुला भेजा है! लेकिन... उनको मुझसे क्या काम हो सकता है?
और फिर-
तुमको बुलाने का कारण यही है, ध्रुव! हमने राजनगर पर आप के बादल देखे थे! उनमें एक खास जादुई ऊर्जा थी! उस जादुई ऊर्जा का कारण जानने के प्रयास में हमने तुमको और इस राक्षस को देखा! हम यह जानना चाहते हैं कि यह तुमको कहां मिला?
यह तो एक मनुष्य है! जो पानी में गोता लगाते-लगाते राक्षस बन गया! कैसे बना यह मुझे नहीं मालूम!
ओह! यानी तुमको सही स्थान का पता नहीं है?
सही स्थान? मुझे सारी बातें साफ-साफ बताओ!
यह देवजाति और रक्ष जाति की युगों पुरानी युद्ध गाथा का एक हिस्सा है, ध्रुव!...
... बात लगभग साढ़े तीन हजार साल पुरानी है!...

...जहां पर आज राजनगर और महानगर बसे हुए हैं, वहीं कहीं पर एक विशाल, शक्तिशाली और समृद्ध राज्य शिरोधरपुर हुआ करता था-
उस समय देवों का प्रभाव लगभग पूरी पृथ्वी पर फैल चुका था! पाप के रक्षक, रक्षजाति वालों यानी राक्षसों का लगभग विनाश हो चुका था! उनको अपनी संख्या और प्रभाव बढ़ाने की सख्त जरूरत थी! और राक्षसों के नायक विभत्सू ने इस काम के लिए शिरोधर पुर को ही चुना-
उसने शिरोधरपुर के पास में ही, गुप्त रूप से एक भूमिगत नगर का निर्माण किया! यह ऐसा मायावी नगर था, जिसमें प्रवेश करने वाला हर देव या इन्सान, राक्षस बन जाता था-
समस्या एक ही थी-
शिरोधरपुर की जनता को उस भूमिगत नगर में आने के लिए मजबूर कैसे किया जाए-
इसका रास्ता भी विभत्सू ने निकाल ही लिया-
उसने राक्षसी शक्तियों के द्वारा शिरोधरपुर में कहर फैला दिया-

और विभत्सू का खास आदमी हुंकारा वेष बदलकर मुसीबत में फंसे कई लोगों को सुरक्षित स्थान पर ले जाने का लालच देकर उनको भूमिगत नगरी में ले आया-
उस पाताल नगरी में पैर रखते ही वे सभी राक्षसी शक्तियों से युक्त हो गए-
और यह सिलसिला चलता रहा! शिरोधरपुर के वासी ही राक्षस बनकर, शिरोधरपुर में तबाही मचाते रहे-
और उनसे बचाने का झांसा देकर हुंकारा, शिरोधरपुर वासियों को पाताल नगरी में लाकर राक्षस बनाता रहा-
हमको जब तक इस बात का पता चला, तब तक पूरा शिरोधरपुर राक्षस जाति में बदल चुका था! अब एक ही रास्ता था! पाताल नगरी पर हमला करके उसको राक्षसों सहित नष्ट कर देना!
लेकिन यह काम आसान नहीं था। क्योंकि नगरी भूमिगत थी! बाहर से उस पर हमला कर पाना असंभव था!

Uploaded by ANAMIKA GUPTA

Uploaded by ANAMIKA GUPTA

Uploaded by ANAMIKA GUPTA

इस शरीर के दो सांपों को मैं सम्मोहित करने में सफल रहा था ! इसको भी अपने सम्मोहन जाल में ही फंसाता हूं !
आऽऽऽह ! आऽऽऽह !
ये सम्मोहन तरंगें ! मैं इस जाल में नहीं फंसूंगा, नागराज !
कोई फायदा नहीं है, ध्वंसक ! कभी न कभी तो तू आंख खोलेगा ही ! तब तू सम्मोहित हो जाएगा !
खच्च
मैं अपनी आंखें ही फोड़ लूंगा नागराज ! फिर तू मुझे कैसे सम्मोहित करेगा ?
तुझे मैं अभी भी अपनी जीभ से महसूस कर सकता हूं, नागराज ! तू बच नहीं सकता !
ओऽऽऽह ! विष फुंकार तो मेरे अपने ही सर्प पर खास असर नहीं करेगी ! ...

Uploaded by ANAND GUPTA

Uploaded by ANAMIKA GUPTA

Uploaded by ANAMIKA GUPTA

मुझे इस जादुई जल के असर से बचना होगा! लेकिन कैसे? समझा! इस जल का असर अभी मेरी त्वचा तक ही है! इससे पहले कि ये जल मेरे रोम छिद्रों के जरिए मेरे शरीर में घुसे...
खच
... मैं जादुई जल से भीगी अपनी केंचुली उतार फेंकूंगा!
लेकिन ऐसा करने से मैं कमजोर भी हो जाऊंगा! मुझे ध्यान रखना होगा कि मैं जादुई जल में गिर न जाऊं!
अब तू गया नागराज!
अब तू मेरे जादुई वार से नहीं बच पाएगा!
आऽऽऽह!
मे... मेरी खाल सिकुड़ रही है! मेरी हड्डियों को दबा रही है!

नागराज पर जादू असर करता जा रहा था-
ड्रिलिंग मशीन तेजी से पानी निकालती जा रही थी-
और पातालनगरी में भरे जल का स्तर घटता जा रहा था-
फूSSSSS
आSSSSह!
मैं... मैं कितने युगों बाद उठा हूं? पता नहीं! देवों ने मेरी योजना को ध्वस्त कर दिया! लेकिन इस बार विभत्सू उनके जाल में नहीं फंसेगा!
पता करता हूं! कोई देव मेरी नगरी के आस-पास तो नहीं है!
है! ए... एक देव पाताल नगरी की सीमा पर है!

"उस सीमा पर, जिसका पता अब तक देवों को भी नहीं था-"
"लेकिन अब वह सीमा द्वार, एक नदी के तल में चला गया है! कमाल है! यानी मुझे सोए कई सदियां बीत चुकी हैं-"
"लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता! मैंने जो योजना सदियों पहले बनाई थी, वह अब पूरी होगी! सारे देव मरेंगे!...और शुरुआत इस देव से होगी-"
ये तुम मुझे कहां ले आए हो, ध्रुव?
यहां पानी में न तो उस तीर ऊर्जा का कोई चिन्ह है, और न ही जादुई राक्षसी ऊर्जा का!
जगह तो यही है धनंजय! मुझे अच्छी तरह से पता है!
लेकिन वह जादुई जल न जाने खिंचकर कहां चला गया है?
जादुई जल सचमुच खिंच रहा है, देव! क्योंकि पाताल नगरी के ऊपर उग आए जंगल में, एक यंत्र के द्वारा भूमिगत जल को बाहर निकाला जा रहा है!
राक्षस आजाद हो रहे हैं! तुम देवों को बन्दी बनाने के लिए!
विभत्सू! तू... तू फिर से जाग गया!
हां! अगर विभत्सू जागता नहीं, तो देव मौत की नींद सोते कैसे?
ले, भेज रहा हूं मैं तेरी मौत को!

Uploaded by ANAMIKA GUPTA

Uploaded by ANAMIKA GUPTA

Uploaded by ANAMIKA GUPTA

Amaan

Uploaded by ANAMIKA GUPTA

Uploaded by ANAMIKA GUPTA

Uploaded by ANAMIKA GUPTA

मंत्रित जल को यहां पर निकाला जा रहा था-
आऽऽऽ ह!
हा हा हा! कुछ ही देर में तेरी टूटी-फूटी हड्डियों से भरा तेरी खाल का थैला पानी पर तैरता नजर आएगा, नागराज!
पानी पर तैरती मेरी लाश! ओह! यह तो वह जल है, जिसमें जादू को घोलने की शक्ति है! ऐसा हंकारा ने खुद कहा था!
यानी यह जल मेरे शरीर पर हुए जादू को भी घोल सकता है! कोशिश करके देखने में कोई हर्ज नहीं है!...
... वर्ना मौत तो ऐसे भी निश्चित है! और इस जादुई जल में भीग कर भी!
और-
वाह! जादू सचमुच खत्म हो रहा है! अब इससे पहले कि हंकारा का जादू खत्म हो जाए, और जल का जादू दुबारा मुझ पर चढ़ जाए, इस पानी से अलग हो जाना चाहिए!
नागराज! तू... तू ठीक हो गया!

Amaan

हां! और इसका मतलब है कि अब तू बीमार पड़ने वाला है!
मेरी विष फुंकार की पीकर!
तेरी फुंकार के घातक प्रभाव को मैं जान चुका हूं!
इसलिए मैं तब तक अपनी सांस रोके रखूंगा, जब तक मेरा पानी निकालने का कार्य पूरा नहीं हो जाता!
अब मैं तेरे वारों से नहीं, बल्कि तू मेरे वारों से बचने की कोशिश करता फिरेगा नागराज!
ओह! इसको मैं एक घूंसे से बेहोश कर सकता हूं! लेकिन इसके पास तक पहुंचूं कैसे? हर जीवित वस्तु इसका जादुई वार खाकर खतरनाक प्राणी बन जाएगी! इसलिए न तो मैं अपने सर्पों का वार कर सकता हूं, और न ही पेड़-पत्तों तक का कवच बनाकर इस तक पहुंच सकता हूं! फिर क्या करूं?
ओह, हां! एक तरीका है! एक कवच है, जिस पर जादुई वार बेअसर साबित होंगे!

Uploaded by ANAMIKA GUPTA

Amaan

तभी-
धनंजय! यह तो... नागराज है! और एक राक्षस उसको जमीन के नीचे घसीटना चाहता है! शायद पाताल नगरी में!
हम ठीक समय पर पहुंचे हैं ध्रुव! यह हंकारा है! विभत्सू का खास सेवक! हमको नागराज को बचाना होगा!
एक रस्साकशी सी शुरू हो गई-
एक तरफ स्वर्णपाश की जकड़ थी-
तो दूसरी तरफ जादू की पकड़।
और इस दबाव से-
आऽऽऽह! मेरे... मेरे शरीर के दो हिस्से हो रहे हैं! मैं... मैं दो भागों में बंट रहा हूं!

Amaan

Uploaded by ANAMIKA GUPTA

दुश्मन नागराज

शीघ्र आ रहा है दो नागराजों और एक ध्रुव से युक्त यह विनाशकारी विशेषांक

Uploaded by ANAMIKA GUPTA